

यह राग धैरवी थाट से निकलता है। इसकी जाति औडव औडव मानी जाती है। इस में गंधार धैवत लगते इसलिए इसकी जाति औडव औडव मानी जाती है। इसका वादी स्वर मध्यम तथा सम्बादी स्वर षड्ज और निषाद कोमल लगते हैं। इसका वादी स्वर मध्यम तथा सम्बादी स्वर षड्ज माना जाता है। इसके गाने का समय रात्रि का तीसरा पहर है।

आरोह :- नी स गु म धु नी साँ।

अवरोह :- सं नी धु म गु म गु स।

पकड़ :- म गु म धु नी धु म गु स।

✓ राग बिहाग



आरोहन में रे ध वर्जित, गावत राग बिहाग।
प्रथम प्रहर निशि गाइये, सोहत ग-नि सम्बाद॥

राग विवरण—इस राग की रचना बिलावल थाट से मानी गई है। इसके आरोह में रे, ध स्वर वर्ज्य हैं और अवरोह में सातों स्वर प्रयोग किये जाते हैं। इसलिए इसकी जाति औडव-सम्पूर्ण है। वादी स्वर गंधार और सम्बादी निषाद है। रात्रि के प्रथम प्रहर में इसे गाते बजाते हैं। कभी-कभी तीव्र म और शेष स्वर शुद्ध प्रयोग किये जाते हैं।

आरोह-नि सा ग, म प, नि साँ।

रे ग ध नि कोमल साथत, मानव मध्यम वादी।

प्रात समय जाति सम्पूर्ण, सोहत सा सम्भादी॥

राग-विवरण-इसकी रचना भैरवी थाट से मानी गई है। इसमें रे, ग, ध और नी स्वर कोमल लगते हैं। मध्यमवादी और षडज सम्भादी माना जाता है। जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। **गायन-समय** प्रातःकाल है।

आरोह-सा ते गु म प धु नि सां।

अवरोह-सां नि धु प म गु ते सा।

पकड़- म गु ते गु सा रे सा, धु नि सा।

राग वृन्दावनी सारंग

वर्ज्य करे धैवत गंधार, गावत काफी अंग।

दो निषाद रै प सम्बाद, है वृन्दावनि सारंग॥

राग विवरण-वृन्दावनी सारंग राग का जन्म काफी थाट से माना गया है। इसमें गंधार और धैवत वर्ज्य हैं। अतः इसकी जाति औडव-औडव है। निषाद आरोह में शुद्ध तथा अवरोह में कोमल प्रयोग किया जाता है। अन्य स्वर शुद्ध हैं।

आरोह-नि सा, रे, म प, नि सां।

अवरोह-सां, नि प, म रे, सा।

पकड़-नि. सा रे, म रे, प म रे, नि सा।

भीमपलासी

4

यह राग काफी थाट से निकलता है। आरोह में 'रे' और 'ध' नहीं लगता और अवरोह में सब स्वर लगते हैं, इसलिए इसकी जाति औडव-सम्पूर्ण मानी जाती है। इसमें 'ग' और 'नी' कोमल लगते हैं। वादी स्वर 'म' और सम्भादी स्वर 'स' माना जाता है। गाने-बजाने का समय दिन का तीसरा प्रहर है।

आरोह-नी, स, गु, म प नी सं।

अवरोह-सं, नी, ध प, म गु रे स॥

— रा रे स।

~~Ch-4-C
C-4(l.)~~

नवाँ अध्याय

निबन्ध

Supra Secret

शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत

शास्त्रीय संगीत हम उसे कहते हैं, जिसके कुछ विशेष नियम होते हैं। उन नियमों का पालन सदैव आवश्यक होता है। इसी प्रकार चित्रपट संगीत हम उसे कहेंगे जिसका प्रयोग किसी चित्रपट (फिल्म) में हुआ हो। इस दृष्टि से 'बैज बावरा' का शास्त्रीय गीत राग देशी में निबद्ध 'आज गावत मन मेरो,' 'झनक झनक पायल बाजे' का राग मुलतानी में निबद्ध 'गिरधर गोपाल' तथा 'झनक झनक पायल बाजे' आदि गीत सभी चित्रपट संगीत कहलायेंगे। किन्तु नहीं। चित्रपट संगीत की कुछ अपनी निजी विशेषतायें होती हैं, जो बड़ी सरलता से पहचानी जा सकती हैं। हल्के-फुलके गीत, आकर्षक रचना, सस्ते ढंग के शब्द किन्तु भाव से भरे हुये, वाद्यवृन्द (आक्रेष्ण) का उत्कृष्ट प्रयोग, चटकीली बन्दिशें, मधुर कंठ द्वारा गाया जाना आदि चित्रपट संगीत के प्रमुख लक्षण हैं। सारांश में चित्रपट संगीत का मुख्य उद्देश्य यह है कि सुनने में मधुर एवं शीघ्र प्रभाव डालने वाला हो। इसमें स्वर, ताल, शब्द, राग आदि का कोई बन्धन नहीं होता। इसमें अधिकतर दादरा और कहरवा तालों का प्रयोग होता है। कुछ फिल्मी गीत अन्य तालों में भी पाये जाते हैं।

शास्त्रीय संगीत में नियमों का पालन अनिवार्य होता है। स्वर, लय, तालबद्ध होना, रांग के अनुकूल स्वरों को लगाना, गाने-बजाने में क्रम होना, आलाप-तान, बोलतान, सरगम आदि की तैयारी और सफाई के साथ उच्चारण करना आदि शास्त्रीय संगीत के मुख्य नियम हैं। इन्हें मानते हुये आनंद की सृष्टि करना हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का उद्देश्य है। अधिकांश व्यक्तियों के साथ यह होता है कि उन्हें संगीत के इन नियमों के सीखने में ही इतना समय बीत जाता है कि उसके उद्देश्य (रंजकता) तक नौबत नहीं आती या यों कहिये कि वे संगीत के व्याकरण के चक्कर में इतना फँस जाते हैं कि वही उनका उद्देश्य बन जाता है और वास्तविक उद्देश्य से बहुत दूर हो जाते हैं इसलिये ऐसे

(१६६)

अधिकांश गायकों में इस नहीं रहता। उनमें केवल गलाबाजी दिखाई पड़ती है। दूसरी ओर चित्रपट संगीत में कोई बच्चन नहीं रहता और रंजकता, मधुरता एवं भावात्मक सौदर्य की सृष्टि ही उसका एकमात्र उद्देश्य रहता है। गाना गाने के लिये भघुर कठ, संगीत-निर्देशन के लिये योग्य निर्देशक, पृष्ठभूमि संगीत देने के लिये कुशल कलाकार आदि निमन्त्रित किये जाते हैं। इन सब व्यक्तियों का सम्मिलित प्रयत्न फिल्म में अभिनय के साथ प्रदर्शित किया जाता है। अभिनय और गाने का ऐसा सम्बन्ध जुड़ जाता है कि जब कभी उस गाने को सुनते हैं तो उससे सम्बद्ध फिल्म की भूमिका याद आ जाती है। अगर वह चित्रपट देखी हुई रहती है तो श्रोता को अधिक आनंद आता है। शास्त्रीय संगीत में इस प्रकार का अभिनय तो नहीं रहता और जो कुछ (हाथ-पैर चलाना, मुँह बनाना आदि) रहता भी है तो उसका प्रभाव श्रोताओं पर अच्छा नहीं पड़ता।

सबसे मुख्य बात यह है कि शास्त्रीय संगीत की उचित प्रशंसा करने के लिये संगीत का थोड़ा-बहुत ज्ञान आवश्यक होता है। हम चाहे उसकी बारीकियों को न समझें; किन्तु कम से कम इतना तो जानना आवश्यक है कि राग-गायन में आलाप-तान क्या है। शास्त्रीय संगीत में इनका कितना महत्व है। गायक अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर नये-नये स्वर-समूहों की रचना करता है और उसे प्रत्येक स्थल पर लय-ताल आदि की सीमा में निवृद्ध रहना पड़ता है, इत्यादि-इत्यादि। इसलिये शास्त्रीय संगीत का आनंद लेने के लिये उसके विधाओं का ज्ञान आवश्यक है। किन्तु चित्रपट अथवा भाव-संगीत की प्रशंसा के लिये संगीत के लेशमात्र ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती। इसलिये साधारण जनता चित्रपट संगीत से अधिक प्रभावित होती है।

चित्रपट संगीत लय प्रधान संगीत है, इसलिये दादरा और कहरवा ताल अधिक प्रयोग किये जाते हैं। साधारण स्तर के लोगों को चलती-फिरती लय शीघ्र प्रभावित करती है। दूसरी ओर शास्त्रीय संगीत में लय की तुलना में स्वर प्रधान होता है। यह अवश्य है कि लय का प्रभाव क्षणिक और स्वर का स्थायी होता है। अतः शास्त्रीय संगीत की प्रशंसा अथवा मूल्यांकन वही व्यक्ति कर सकता है जिसे संगीत की थोड़ी-बहुत शिक्षा मिली हो अथवा ज्ञान हो। अतः शास्त्रीय संगीत के प्रचार के लिये यह आवश्यक है कि अधिकांश जनता को संगीत की थोड़ी बहुत शिक्षा दी जाय। दूसरे शब्दों में 'तानसेन' नहीं अपितु 'कानसेन' तैयार किये जाँय।

(h-4-16)

भातखंडे तथा विष्णु दिगम्बर स्वरलिपियों में तुलना

समता-

- (1) दोनों स्वर-लिपियों के रचयिता का जन्म महाराष्ट्र में उनीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।
- (2) दोनों स्वर-लिपियों में शुद्ध स्वर के लिये कोई चिन्ह नहीं लगाते।
- (3) दोनों स्वर-लिपियों में मध्य सप्तक के स्वर के लिये कोई चिन्ह नहीं लगाते।
- (4) दोनों में कण स्वर के लिये एक ही प्रकार से लिखते हैं, जैसे- प्यु अथवा सानि।
- (5) दोनों स्वर-लिपियों में मीड के लिये एक ही प्रकार का चिन्ह लगाते हैं, जैसे- ग सा।
- (6) दोनों स्वर-लिपियों में पहले स्वर लिखते हैं और उसके नीचे गीत के शब्द लिखते हैं।
- (7) दोनों स्वर-लिपियों में गीत के पहले भाग को स्थायी और दूसरे भाग को अंतरा कहते हैं।

विभिन्नता-

- (1) कोमल स्वर के लिये भातखंडे पद्धति में स्वर के नीचे पड़ी रेखा खींचते हैं, जैसे- रे, ग, किन्तु विष्णु दिगम्बर पलुस्कर पद्धति में कोमल के लिये स्वर के नीचे हलन्त लगाते हैं, जैसे- रे ग।
- (2) तीव्र चिन्ह के लिये भातखंडे पद्धति में स्वर के ऊपर खड़ी रेखा लगाते हैं, जैसे म, किन्तु पलुस्कर स्वर-लिपि में तीव्र के लिये उलटा हलन्त लगाते हैं, जैसे मु अथवा म्र।
- (3) मन्द सप्तक के लिये भातखंडे पद्धति में स्वर के नीचे बिन्दु लगाते हैं, जैसे नि ध प, किन्तु पलुस्कर स्वरलिपि में स्वर के ऊपर बिन्दु लगाते हैं, जैसे- रं ग मं।

(4) तार सप्ताक के लिये भातखंडे पद्धति में स्वर के ऊपर बिन्दु लगाते हैं, जैसे— सा रे ग, किन्तु पलुस्कर स्वरलिपि में स्वर के ऊपर खड़ी रेखा लगाते हैं, जैसे ग घ प।

(5) एक मात्रा के लिये भातखंडे पद्धति में स्वर के नीचे कोई चिन्ह नहीं लगाते। बस, प्रत्येक स्वर को अलग-अलग लिखते हैं, जैसे सा रे ग, किन्तु पलुस्कर स्वरलिपि में स्वर के नीचे पड़ी रेखा लगाते हैं, जैसे— ते गु मु प।

(6) आधी मात्रा के लिये भातखंडे स्वरलिपि में दो स्वरों को मिलाकर लिखने के बाद उनके नीचे एक चाँद — बना देते हैं, जैसे— गु, किन्तु पलुस्कर स्वर-लिपि में प्रत्येक स्वर के नीचे जीरो लिखते हैं, जैसे— सा रे ग म।
○ ○ ○ ○

(7) चौथाई अर्थात् $\frac{1}{4}$ मात्रा के लिये भातखंडे पद्धति में चारो स्वरों को एक में मिलाने के बाद नीचे एक चाँद लगा देते हैं, जैसे— सारेगम, किन्तु पलुस्कर स्वरलिपि में प्रत्येक स्वर के लिये अलग-अलग चाँद बनाते हैं, जैसे सा रे ग म।

(8) किसी स्वर की मात्रा बढ़ाने के लिये भातखंडे पद्धति में स्वर के आगे ऋण (-) का चिन्ह लगाते हैं। जितनी मात्रा बढ़ाना हो उतने ही यह चिन्ह लगाते हैं, किन्तु पलुस्कर स्वर-लिपि में प्रत्येक मात्रा अथवा मात्रा-खंड के लिये चिन्ह है, जैसे— दो मात्रा के लिये (~), तीन मात्रा के लिये ~ तथा स्वर की दाहिनी ओर बिन्दु जैसे गु। चार मात्रा के लिये ४, ३ ३ ३, $\frac{1}{4}$ मात्रा के लिये स्वर के नीचे एक चाँद, $\frac{1}{8}$ मात्रा के लिये स्वर के नीचे दो चाँद, $\frac{1}{16}$ मात्रा के लिये स्वर के नीचे (~~) जैसे गु मु प।

(9) भातखंडे स्वर-लिपि में विभाग-चिन्ह लगाते हैं, किन्तु पलुस्कर स्वर-लिपि में विभाग चिन्ह नहीं लगाते। बल्कि एक आवर्तन के बाद एक पाई (।) और स्थाई व अंतरा के बाद दो पाई (॥) लगाते हैं।